भिखारी और राजकुमार

सुबोध बाल सीरीज-२६

भिखारी और राजकुमार

मार्क ट्वीन

सुबोध बाल पॉकेट बुक्स, दिल्ली

प्रकाशक | पैराडाइज पब्लिकेशंज
दरियागंज, दिल्ली-६

संस्करण | जून, १९७३

मुद्रक | अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-३२

मूल्य : एक रुपया

भिखारी और राजकुमार

टाम कैंटी

यह एक ऐसे भिखारी लड़के की कहानी है जो कुछ दिनों के लिए राजकुमार बन गया था। और जो सचमुच का राजकुमार था, वह कुछ दिनों के लिए भिखारी बन गया था। राजकुमार को पता लग गया कि प्रजा के निर्धन लोग किस तरह का जीवन बिताते हैं। भिखारी बालक सोचता था कि राजकुमार कैसे मौज-मजे लूटते होंगे। पर अब वह राजकुमार बन गया तो उसे मालूम हुआ कि बात ऐसी नहीं है।

× × ×

लन्दन की एक गन्दी बस्ती में, एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में कैंटी परिवार रहता था। यह झोंपड़ी न तो आदमी की हड्डियों कंपा देने वाली ठंड से इस परिवार की बचाती थी और न वर्षा के पानी

से। वर्षा होती तो पानी भीतर टपकने लगता और झोंपड़ी के भीतर थोड़ी-सी जगह भी सूखी नहीं रहती। इस तंग और सीलन वाली झोंपड़ी में कैटी परिवार के छः लोग रहते थे। टाम के माता-पिता और बुढ़िया दादी तथा दो बहनें। उन लोगों के पास न तो इतनी जगह थी कि खाट बिछा सकें और न खाटें ही थीं। गन्दे चिथड़ों की गूदड़ी को बिछाकर और ओढ़कर वे धरती पर सर्दी से ठिठुरते किसी तरह रात को सो रहते। टाम का पिता कैटी कोई काम नहीं करता था। वह कोई काम करना ही नहीं चाहता था। यही कारण था कि परिवार के लोगों को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता था। कपड़ों का तो कहना ही क्या। जाड़ा कैटी दिन निकलते ही तीनों बच्चों—टाम और दोनों बहनों को भीख माँगने के लिए बाजारों में भेज देता। वे बेचारे भीड़-भाड़ वाले बाजारों और चौराहों में सड़क के किनारे खड़े हो जाते और आते-जाते लोगों से कहते, "बाबूजी, बाबूजी, एक पैसा दे दो, भगवान तुम्हारा भला करेगा।"

उन्हें जो कुछ मिलता उसे शाम को अपने पिता को दे देते। किसी दिन ऐसा भी होता कि कुछ नहीं मिलता या बहुत कम मिलता तो शाम को उनका पिता जान उन्हें पीटता कि वे कम पैसे क्यों लाए। वह समझता कि या तो बच्चों ने पैसे खर्च कर दिए हैं या ये दिन भर भीख न माँगकर इधर-उधर घूमते रहे हैं।

वह उन्हें रात को खाने को नहीं देता और बेचारे बच्चे रोटी के बदले मार खाकर रोते-सिसकते बिस्तरों में दुबक जाते तो भूख और ठंड के मारे उन्हें नींद भी न आती।

टाम का जी करता कि वह घर से भागकर कहीं दूर चला जाए और फिर कभी इस घर में लौटकर न आए पर उसकी दादी, माँ और दोनों बहनें उसे बहुत प्यार करती थीं और वह भी उन्हें बहुत चाहता था। पिता द्वारा अपने पिटने का तो उसे उतना दुःख नहीं होता पर जब नन्हीं-मुन्नी बहनों की पिटाई होती तो उसके दुःख का ठिकाना नहीं रहता। टाम की बुढ़िया दादी भी प्रतिदिन भीख माँगने जाती थी और अपने

निठल्ले बेटे जान से छिपाकर बच्चों को कुछ दे दिया करती थी। कभी-कभी तो टाम का पिता उसकी माता को भी बिना बात के पीटने लगता।

इसी गन्दी बस्ती की एक झोंपड़ी में एक भला पादरी रहता था। वह था तो निर्धन, पर स्वभाव का बड़ा भला और परोपकारी था। वह पढ़ा-लिखा और समझदार था। पास-पड़ोस के लोग उससे सलाह लेते और अपने झगड़ों को सुलझाने के लिए उसे पंच बनाते। वह सबको ठीक सलाह देता और झगड़ों के निपटारे में बिना पक्षपात किए अपना निर्णय देता। उसकी बोल-चाल की मिठास और व्यवहार-कुशलता के कारण सभी उसका मान करते और उसकी बात मानते।

यह भला पादरी बच्चों से बहुत प्यार करता। बच्चे भी उसे घेरे रहते और वह उन्हें मजेदार और शिक्षाप्रद कहानियां सुनाकर उन्हें अच्छे बच्चे बनाने का प्रयत्न करता। टाम और कुछ दूसरे बच्चे रात को पादरी चाचा के झोंपड़े में इकट्ठे हो जाते और पढ़ना-लिखना सीखते। पादरी उन्हें राजाओं और राजकुमारों-राजकुमारियों

की कहानियाँ सुनाता। वह साहबलाल की धर्म कथाएँ भी सुनाता और उसके पास जो थोड़ी-सी किताबें थीं, उन्हें बच्चों को पढ़ने के लिए दे देता। वह जब कभी बाजार जाता और उसकी जेब में पैसे होते तो वह कबाड़ी की पुस्तकों की दुकान से बच्चों के लिये कुछ पुरानी पुस्तकें खरीद लाता, बच्चे बारी-बारी उन पुस्तकों को बड़े चाव से पढ़ जाते।

राजकुमारों के ठाठ-बाठ की कहानियाँ पढ़-कर टामू सोचता कि कैसे मजे लूटते हैं ये लोग और एक हम हैं कि जिन्हें दो जून भरपेट रूखा-सूखा भोजन भी नहीं मिलता। उसका भी जी करता कि मैं राजकुमारों जैसे बढ़िया कपड़े पहनू, महलों में रहूँ, नौकरों-चाकरों पर हुक्म चलाऊँ और बढ़िया-बढ़िया चीजें खाऊँ और पिऊँ। शान के साथ अकड़कर चलूँ, राजकुमारों की तरह नपी-तुली बातें करूँ। उस गन्दी बस्ती के गन्दे बच्चों की भाषा छोड़कर वह सभ्य लोगों जैसी भाषा बोलने का प्रयत्न करता। वह पुस्तकों में राजकुमारों के सम्बन्ध में जो कुछ पढ़ता उसकी

सकल करने का प्रयत्न करता, जैसे वह गली-गली भटकने वाला भिखमंगा न होकर कोई राज-कुमार हो।

अब वह अपने साथियों के साथ खेलता तो स्वयं राजकुमार बनता। उसकी चाल-ढाल और बातचीत बिल्कुल कहानियों के राजकुमारों की तरह होती। हाँ, यह बात अलग है कि उसके कपड़े फटे-पुराने होते। कभी-कभी तो उसके साथी उसका मज़ाक उड़ाते पर वह उनके मज़ाक की परवाह नहीं करता और उन्हें बड़े रोब के साथ डाँट देता। वह अपने हमजोलियों में सबसे सुन्दर, चालाक, पढ़ा-लिखा और मार-पीट में होशियार था। उसमें टोली के नेता के सभी गुण विद्यमान थे। वह स्वयं किसी ऊँचे चबूतरे पर बैठकर साथियों को तरह-तरह की आज्ञाएँ देता। तुम यह करो, तुम वह करो। तुम यहाँ खड़े होकर पहरा दो, और तुम सिपाही बनकर चोर को पकड़ लाओ। धीरे-धीरे टोली के सभी लड़के इन खेलों में मज़ा लेने लगे और टाम को राजकुमार टाम कहने लगे। टाम अपने नाम के साथ राजकुमार

का विशेषण सुनकर खूब प्रसन्न होता। उसके साथियों ने एक तरह से उसे अपना नेता मान लिया था। कभी लड़कों की दूसरी टोली से टाम वाली टोली की मुठभेड़ हो जाती तो टाम ही अपनी टोली का मुखिया बनता और सबसे आगे होकर लड़ता। प्रायः टाम की टोली जीत जाती और दूसरी टोली पर इस टोली की धाक जम जाती। टोली के जीतने से टोली के सरदार का मान बढ़ जाता और टाम अपनी टोली को घूंसे-बाजी और पहलवानी के तरह-तरह के दाव-पेच सिखाता रहता जिससे समय पड़ने पर दूसरों को छकाया और हराया जा सके। वह अपने पास एक मोटा डंडा रखता था, जिसे वह कभी तलवार की तरह और कभी बन्दूक की तरह अपने साथ रखता।

टाम कभी तेज दौड़ का मुकाबला करवाता और कभी तैराकी का। कभी कबड्डी का मैच होता तो कभी 'खो' का। वह स्वयं भी बहुत अच्छा खिलाड़ी था।

× × ×

इन दिनों इंगलैण्ड में राजा हेनरी आठवें का राज्य था। उनके एक ही राजकुमार था जिसका नाम एडवर्ड था। राजकुमार एडवर्ड राजा का इकलौता बेटा था और वही राज्य का उत्तराधिकारी बनने वाला था। राजा और रानी राजकुमार को बहुत प्यार करते थे। महल के नौकर-चाकर राजकुमार के सामने हाथ जोड़कर खड़े रहते और जो भी आज्ञा मिलती, उसका तुरन्त पालन करते। सभी जानते थे राजा हेनरी बूढ़े हो चले हैं और बीमार भी रहते हैं। उनका क्या भरोसा कि कब चल बसें। और उनके बाद राजकुमार एडवर्ड ही राजा बनकर राजगद्दी पर बैठने वाला था। इसलिए सभी उसे प्रसन्न रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न करते थे। राजकुमार को राज-काज की शिक्षा देने के लिए बड़े-बड़े योग्य राजनीतिज्ञों को नियुक्त किया गया था। एक होने वाले राजा को कई तरह की बातों की जानकारी होना जरूरी थी, इसलिए राजकुमार का बहुत-सा समय पढ़ने-लिखने में चला जाता था। उसे युद्ध-विद्या की शिक्षा भी लेनी होती थी। कुछ

समय खेलों में भी देना होता था। इन कारणों से राजकुमार के पास गंवाने के लिए थोड़ा भी समय नहीं था। दिन-भर का कार्यक्रम बन्धा हुआ था। इतने बजे जागना और इतने बजे सोना, इतने बजे खाना और इतने समय तक पढ़ना आदि।

राजा हेनरी के राजमहल का नाम था वेस्ट-मिनिस्टर। यह राजमहल बड़ा लम्बा-चौड़ा, ऊँची दीवार से घिरा हुआ कारीगरी का नमूना था। राजा हेनरी अपने परिवार सहित इसी महल में रहता था। इस महल में अनेक कमरे थे। प्रत्येक कमरा कीमती कालीनों, फर्नीचर, पर्दों और झाड़-फानूसों से सजा हुआ था। महल के फाटकों पर बन्दूकधारी सिपाही पहरा देते थे और बिना राजाज्ञा के कोई भी भीतर नहीं आ सकता था। बड़े फाटक से देखने पर भीतर रंग-बिरंगे फूलों की फुलवाड़ी और फव्वारे दिखाई देते थे।

× × ×

एक दिन पादरी महोदय ने जब टाम को राजकुमार बना, एक चबूतरे पर बैठा और अपने साथियों को तरह-तरह की आज्ञाएँ देते सुना तो

रात को उसे बताया कि तुम किसी दिन वेस्ट-मिनिस्टर के राजमहल में जाकर सचमुच के राज-कुमार को देख सकते हो। वह तुम्हारी ही उमर का है। वह राजा हेनरी का इकलौता बेटा है और उनके बाद वही राजा बनने वाला है। यों तो तुम उसे नहीं देख सकते, पर यदि कभी वह घोड़ी पर बैठकर घूमने निकले तो दिख भी सकता है।

भिखारी राजकुमार बना

टाम ने अब तक कहानियों में राजकुमार के सम्बन्ध में पढ़ा था और वह उसी की नकल उतारा करता था। जब पादरी साहब से उसे पता लगा कि इसी लन्दन नगर में, उसी की उमर का सच-मुच का राजकुमार भी रहता है और कभी उसे देखा भी जा सकता है तो उसकी राजकुमार को देखने की इच्छा एकदम बढ़ गई।

दूसरे दिन प्रातः जब वह भीख माँगने के लिए घर से निकला तो उसने सोचा कि क्यों न आज वेस्टमिनिस्टर के राजमहल की ओर जाऊँ। हो सकता है राजकुमार कहीं आता-जाता दिखाई

दे जाए और न भी दिखाई दिया तो भी महल को बाहर से तो देख ही आऊँगा। और रही बात भीख माँगने की, वह तो कहीं भी माँगी जा सकती है। हाँ, उसकी गन्दी बस्ती से महल कुछ दूर अवश्य था पर जिस लड़के का काम ही दिन भर घूम-फिर कर भीख माँगना हो उसके लिए थोड़ी दूर चलना क्या कठिन था! फिर राजकुमार को देखने की इच्छुकता भी उसके पैरों पंख बनकर चिपक गई थी और उसे उड़ाए लिए जा रही थी। वह चलता गया, और लोगों से रास्ता पूछता हुआ राजमहल के बड़े फाटक पर जा पहुँचा।

मोटे सींखचों का बना हुआ लोहे का बड़ा भारी फाटक लगा हुआ था और सींखचों की ऊपर की नोंकें भाले की तरह तीखी थीं। फाटक बन्द था और दो बन्दूकधारी सन्तरी एकदम सीधे अकड़कर खड़े पहरा दे रहे थे। और कोई बालक होता तो मारे डर के उनके पास भी न फटकता पर टामी तो राजकुमार को देखना चाहता था। उसने देखा कि सजी-धजी बग्घियों पर सवार

होकर राजघराने के लोग बाहर-भीतर आ-जा रहे हैं। उन्हें देखते ही पहरेदार सिल्यूट मारते हैं और फाटक खोल देते हैं। पर उनके निकल जाने पर तुरन्त बन्द कर देते हैं। टाम ने एक-दो बार गेट के सींखचों के पास जाने का प्रयत्न किया पर सन्तरियों ने उसे पास न आने दिया।

टाम ने सोचा कि यदि मैं प्रतिदिन यहाँ आता रहूँ तो किसी न किसी दिन राजकुमार अवश्य दिखाई दे जाएगा। इसलिए वह प्रतिदिन वहीं आ जाता और एक ओर खड़ा होकर महल के भीतर-बाहर जाने-आने वालों पर नजर रखता कि इनमें कोई राजकुमार तो नहीं है।

एक दिन बड़े फाटक के पास खड़े टाम ने देखा कि उसी की उमर और कद-काठ का एक सजा-धजा लड़का महल द्वार से निकलकर फाटक की ओर टहलता-टहलता चला आ रहा है। फाटक के सन्तरी उस लड़के को, जो राजकुमार था, फाटक की ओर आते देखकर चौकन्ने हो गए। जब राजकुमार गेट के पास पहुँच गया तो टाम उसे अच्छी तरह देखने के लिए भागकर

फाटक के पास जा पहुंचा और सीखचों से सिर सटाकर देखने लगा। फाटक के बाहर राजकुमार को देखने वालों की भीड़ सड़क के किनारे जमा हो गई थी, जिसके कारण छोटे कद के टाम को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। और कई दिनों तक वहां रुककर काटने के बाद आज राजकुमार महल से बाहर दिखाई दिया था। आज टाम किसी तरह भी चूकना नहीं चाहता था। उसने राजकुमार को अच्छी तरह देख लेने का मन में पक्का निश्चय किया हुआ था। किन्तु ज्यों ही बेचारा टाम सीखचों में से देखने लगा, सन्तरी ने चिल्लाकर कहा, 'पीछे हटो, 'भागो यहां से' पर इस तरह की झिड़की से टाम भागने वाला नहीं था। भिखारी बालक के लिए झिड़की सुनना कोई नई बात नहीं थी। जब फटेहाल इस छोटे से लड़के ने सन्तरी की आज्ञा का पालन नहीं किया तो सन्तरी ने उसे बांह से खींचकर, एक जोर का चांटा दे मारा। सन्तरी के चांटे से टाम की गाल पर पांचों उंगलियों के निशान उभर आए और वह गिर पड़ा। वह पड़ा-पड़ा ही और

से रोने लगा।

राजकुमार ने फाटक के भीतर से यह सा देख लिया था और जरा-सी बात के लिए उ लड़के को पिटते देखकर उसे क्रोध आ गया दयालु राजकुमार को सिपाही का कठोर व्यवहा बहुत अखरा। राजकुमार ने आँखें तरेरकर गुस्से के साथ उस सन्तरी से पूछा, "तुमने इस नि अपराध लड़के को क्यों मारा? फाटक खोलो औ इस लड़के को भीतर आने दो।"

सन्तरी ने कहा, "राजकुमार जी यह तो कोई भिखमंगा लालक है।"

राजकुमार ने उसे झिड़कते हुए कहा, "कोई धनी हो या निर्धन, सभी मेरे पिता राजा की प्रजा हैं। हमारे लिए सब बराबर हैं। तुम इस लड़के को भीतर मेरे पास भेजो।"

सन्तरी ने फाटक खोल दिया और टाम को पुचकार कर उठाया और भीतर राजकुमार के पास जाने को कहा। टाम घबराया हुआ था। वह राजकुमार को नमस्ते कहना भी भूल गया। किन्तु जब राजकुमार ने उससे कहा, 'घबराओ

मत, मेरे साथ भीतर महल में चलो' तो टाम की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। अब दोनों महल के भीतर राजकुमार के कमरे में पहुंच गए तो कमरे की सजावट को देखकर टाम की आंखें चौंधिया गईं। वह भौंचक्का-सा रह गया है। राजकुमार ने उसे बैठने को कहा और पूछा, "मुझे बताओ कि तुम कौन हो, कहां रहते हो और तुम मुझे देखने के लिए इतने उतावले क्यों थे? मैं महल की खिड़की में से देखा करता था कि तुम प्रतिदिन यहां खड़े रहते थे। पर अभी छोड़ो इस बात को। मुझे लगता है कि तुम भूखे हो। पहले खाना खा लो, फिर बातें करेंगे।" यह कहकर राजकुमार ने नौकर को बुलाया और टाम के लिए भोजन लाने को आज्ञा दी। नौकर भोजन ले आया और टाम खाने लगा। ऐसा स्वादिष्ट भोजन उसने आज तक न खाया था, न देखा था। उस बेचारे को तो दो जून सूखी रोटियां भी नहीं मिलती थीं। टाम ने खूब डट कर भोजन किया। अब राजकुमार ने अपनी बात दोहराई। "बताओ तुम कहां रहते हो और क्या

करते हो ? तुम्हारा नाम क्या है और तुम मुझे क्यों देखना चाहते थे ?"

टाम ने कहा, "मैं अपने माता-पिता, दादी और दो बहनों के साथ उपनगर की एक बस्ती में, एक झोंपड़ी में रहता हूँ।"

"अरे, क्या तुम इतने सारे लोग एक झोंपड़ी में रहते हो।"

"जी हाँ।" टाम ने उत्तर दिया।

"कमाल की बात है। यहाँ हमारे राजमहल में सैकड़ों कमरे हैं जो लगभग खाली पड़े हैं और तुम छः लोग एक झोंपड़ी में रहते हो।"

टाम बोला, "हम बहुत ही निर्धन हैं। मेरे पिता मुझे सवेरे ही भीख माँगने भेज देते हैं, और जब मुझे भीख में काफी पैसे नहीं मिलते हैं तो मुझे बुरी तरह मारते हैं और खाने को भी नहीं देते हैं।"

"हे, क्या कहा ? तुम्हारे पिता तुम्हें मारते भी हैं। यह तो बहुत बुरी बात है। खैर, तुम चिन्ता मत करो। मैं अपने सिपाहियों को भेजकर उनकी अच्छी-खासी मरम्मत करवाऊँगा।"

"न, न, कहीं ऐसा मत कर बैठना। इससे मेरी दादी, माता और बहनों को बड़ा दुःख होगा।"

"मेरे भी तीन बहनें हैं। एलिजाबेथ, जेन और मेरी। एलिजाबेथ बड़ी समझदार है। जेन जब देखो तब पढ़ती ही रहती है और दब्बू स्वभाव की है। पर कुमारी मेरी मुझे अच्छी नहीं लगती है। वह जब देखो तब रोनी-सी सूरत बनाए रहती है और कभी भी मेरे साथ नहीं खेलती। क्या तुम भी दूसरे लड़कों के साथ खेलते हो।"

"मैं तो अपने हमजोलियों के साथ खूब खेलता हूँ। कभी-कभी तो ज्यादा खेलने के लिए पिता जी पीटते भी हैं।" टाम ने कहा।

"तुम कौन-कौन से खेल खेलते हो।" राजकुमार एडवर्ड ने प्रश्न किया।

"हम गेंद से खेलते हैं। कभी नदी में तैरते हैं और कोई तेज तैरता है, इसकी शर्त भी लगाते हैं। और कभी-कभी मैं राजकुमार बनता हूँ और हम यह खेल भी खेलते हैं।"

"मैं भी तुम्हारी तरह निर्धन बालक बनकर खेल खेलना चाहता हूँ। मेरा भी नदी में नहाने और तैरने को जी करता है। मेरी बात मानो तो कुछ समय के लिए हम दोनों अपने कपड़े बदल लेते हैं। तुम राजकुमार बन जाओ और मैं भिखारी बन जाता हूँ। बोलो, मेरा सुझाव तुम्हें स्वीकार है या नहीं ?"

टाम यह खेल खेलने के लिए तैयार हो गया। दोनों ने अपने-अपने कपड़े उतारे और एक-दूसरे के पहन लिए। राजकुमार भिखारी बन गया और भिखारी राजकुमार। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और मुस्करा दिए।

राजकुमार एडवर्ड ने टाम को बाँह से पकड़ कर शीशे के सामने ले जाकर अपने साथ खड़ा कर दिया। दोनों ने शीशे में दोनों प्रतिबिम्ब देखे तो हैरान रह गए। दोनों का चेहरा एक-दूसरे से एकदम मिलता था, जैसे जुड़वाँ भाई हों। दोनों का रंगरूप, कद-काठ और उमर भी एक जैसी थी। टाम के कपड़ों में राजकुमार एडवर्ड बिल्कुल भिखारी टाम जैसा दिखाई दे रहा था

राजकुमार एडवर्ड के कपड़े पहनकर भिखारी
एकदम राजकुमार लग रहा था।
राजकुमार ने टाम से कहा, "जब तक मैं
कर नहीं आऊँ तुम यहीं रहना।" फिर उसने
पर से कुछ चीज उठाई और उसे सुरक्षित
ह में रखकर कमरे से बाहर निकल गया।
टाम कमरे में अकेला रह गया।

राजकुमार भिखारी के घर में

राजकुमार बड़े फाटक पर पहुँचा और बड़े
के साथ सन्तरी से बोला, "ओ, सन्तरी,
दी से फाटक खोल, मुझे बाहर जाना है।"
सन्तरी ने फाटक तो खोल दिया पर इस
लमंगे जैसे लड़के को रोब वाली बातों से उसे
सा आ गया और ज्यों ही लड़का फाटक से
हर निकला, उसने पीठ पर एक जोर का थप्पड़
मारा और कहा, "राजा के सन्तरियों के साथ
भ्यता के साथ बात करने का यह दण्ड है।
खे!"
सन्तरी के थप्पड़ से जब एडवर्ड गिर पड़ा

तो बाहर खड़े लोगों ने जोर का ठहाका लगाया एडवर्ड कपड़े झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ और सन्तरी को क्रोधपूर्वक देखता हुआ बोला, "मैं राजकुमार हूँ और तुमने मुझे थप्पड़ मारा है। तुम्हें इसके बदले में मौत का दण्ड मिलेगा।" और फिर ठहाका लगाने पर दर्शकों को सम्बोधित करके बोला, "अरे, मूर्खो! तुम हँस रहे हो!"

यह बात सुनकर वहाँ खड़े लोगों ने दोबारा और भी जोर का ठहाका लगाया। वहाँ खड़े छोकरों में से एक बोला, "अरे, बुद्धुओं की तरह खड़े क्यों हो? राजकुमार साहब को झुककर नमस्कार करो। इनके लिए रास्ता छोड़ो, एक ओर को हट जाओ।" और ज्यों ही एडवर्ड उस भीड़ में से निकला, उन्होंने तीसरी बार जोर का ठहाका लगाया। उनमें से एक बोला, "इसका दिमाग फिर गया है। तभी तो भिखारी का बच्चा अपने को राजकुमार बता रहा है।"

"अरे हाँ, एकदम पागल है। इसकी अक्ल तो देखो। कपड़े इतने गन्दे पहन रखे हैं कि जैसे

किसी बूढ़े के ढेर से उठाकर लाया हो।"

× × ×

एडवर्ड गलियों में होता हुआ चलता गया। उस भीड़ में से किसी ने उसका पीछा नहीं किया। उन्हें डर था कि यह पागल कहीं पत्थर ही उठाकर न दे मारे।

वह सड़कों और गलियों को लांघता चलता गया। उसे कुछ पता नहीं था कि वह कहां जा रहा है? वह राजकुमार था और लन्दन की गलियों में वह कभी गया नहीं था। जाता भी क्यों! उसके लिए तो हर समय बग्घी खड़ी रहती थी और नौकर-चाकर साथ चलते थे। उसे पैदल चलने की क्या आवश्यकता थी। किन्तु आज वह पैदल ही नहीं, नंगे पांव भी था। क्योंकि टाम के पास फटे जूते भी नहीं थे, जिन्हें एडवर्ड पहन लेता। उस टाम को नंगे पांव चलने की आदत पड़ गई थी पर एडवर्ड के पांव तो एकदम कोमल थे। थोड़ी ही देर नंगे पांव चलने पर उसके पांवों में से खून बहने लगा। कई बार ठोकर खाकर वह गिर पड़ा और चेहरे पर धूल

लग गई। वह थक गया। भूख और प्यास से उसका जी घबराने लगा। उसके पास एक भी पैसा नहीं था जो कुछ लेकर खा लेता। उसने सोचा, 'अब क्या करूँ? कहाँ जाऊँ और क्या खाऊँ? काश, कि मुझे कोई ऐसा आदमी मिल जाता जो मुझे वापस महल में पहुँचा देता।' पर वह कभी इस तरह महल से बाहर नहीं निकला था और नहीं जानता था कि ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए?

वह यह सोच ही रहा था कि एक बढ़िया कपड़े पहने एक घुड़सवार उसके पास से निकला। एडवर्ड ने उससे कहा, "श्रीमान्! मैं राजकुमार हूँ। आप मुझे राजमहल में पहुँचाने का कष्ट करें।" पर एडवर्ड की बात घुड़सवार के कानों तक नहीं पहुँची। उसने समझा कि यह भिखमंगा कुछ माँग रहा होगा। वह आगे निकल गया। एडवर्ड ठोकर खाता, गिरता-पड़ता फिर आगे की ओर चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर उसे एक बड़ा भवन दिखाई दिया। वह जानता था कि यह भवन मेरे पिता राजा ने निर्धन बच्चों के

लिए पाठशाला खोलने को दान दिया था। मुझे वहाँ से अवश्य सहायता मिल जाएगी। भवन के आंगण में बहुत लड़के खेल रहे थे। एडवर्ड ने एक लड़के से कहा, "ओ लड़के! भीतर जाओ और अपने मुख्याध्यापक को यहाँ बुला लाओ। उसे कहो कि राजकुमार एडवर्ड तुम्हें बुला रहा है।"

लड़का उसकी बात पर हँसने लगा तो राजकुमार ने उसे पीट दिया और कहा, "तुम्हें अभी मैंने जो आज्ञा दी है, उस काम को करो।"

उस लड़के ने अपने कई साथियों को बुला लिया और एडवर्ड को दिखाकर कहा, "यह लड़का पागल हो गया है। लगता है इसके दिमाग में ज्यादा गर्मी चढ़ गई है। आओ, इसे पानी में गोता लगवाएं जिससे इसका दिमाग ठंडा हो जाए। कहता है, 'मैं राजकुमार हूँ।' जरा राजकुमार के कपड़ों को तो देखो।

लड़कों ने मिलकर एडवर्ड को लिटा दिया और फिर कोई टांगों से, कोई कमर से और कोई सिर से पकड़ कर उठाकर ले चले और पास बहते

गदे नाले के पानी में फेंक दिया। गन्दे कीचड़ से लथ-पथ देखकर वे जोर-जोर से हो-हो करके हँसने लगे।

* * *

साँझ होने लगी थी। गड़बड़े ने सोचा, 'अब क्या किया जाए। रात काटने के लिए कोई

जगह ढूँढनी चाहिए। अब राजमहल में तो मैं कल ही जा सकूँगा। अब यदि मैं किसी तरह पूछ-पाछकर टाम के घर पहुँच जाऊँ तो वहाँ रात काटी जा सकती है।'

वह टाम के बताए पते को याद करके मार्ग पूछकर, उस बस्ती की ओर चल पड़ा। सूर्य अस्त हो रहा था। पश्चिमी दिशा में लाली छायी हुई थी। घरों में दिये जलने लगे थे और सड़कों पर भीड़-भाड़ कम होती जा रही थी। एडवर्ड चला जा रहा था कि किसी बड़ी-बड़ी और भारी बाहों वाले ने उसे पकड़ लिया। पकड़ने वाला बोला, "तुम इस समय तक कहाँ थे और क्या कर रहे? बोलो, मेरी बात का उत्तर दो। आज भीख में तुम्हें कितने पैसे मिले टाम?"

एडवर्ड ने कहा, 'क्या तुम उसके पिता हो?'

"उसका पिता? मैं तुम्हारा पिता हूँ।"

"नहीं, नहीं, तुम मेरे पिता नहीं हो। मैं तो राजकुमार हूँ। तुम्हारा पुत्र वेस्टमिनिस्टर के राजमहल में है। मुझे वहाँ ले चलो और उसे वहाँ से ले आओ।" एडवर्ड ने कहा।

जान कैंटी ने लड़के की ओर देखा और बोला, "तुम पागल हो, एकदम पागल।"

उसने लड़के के कान मरोड़ते हुए कहा, "घर चलो, मैं अभी तुम्हारा सारा पागलपन उसे से भगाता हूँ। अपनी जेब से आज भीख में मिले सारे पैसे निकालो! जल्दी करो।"

टाम के साथ कैसी गुजरी

टाम वेस्टमिनिस्टर के राजमहल में, राजकुमार के कमरे में अकेला रह गया था। पहले कुछ देर तो वह बड़े शीशे के सामने खड़ा होकर अपने को देखता रहा। राजकुमार के कपड़े पहनकर वह एकदम राजकुमार लग रहा था और उस की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। उसने अपने बाएँ ओर लटकती तलवार को म्यान से निकाला और शीशे के सामने उसे घुमाने लगा। वह लाठी को तलवार की तरह तो खेल में भी चलाया करता था। आज वह सचमुच की तलवार को लेकर वैसा ही करने लगा। शीशे में अपने प्रतिबिम्ब को भी वैसे ही तलवार भाँजते देखकर उसे

ऐसा लगा जैसे सामने कोई व्यक्ति उसके साथ तलवार युद्ध कर रहा हो। उसे इस खेल में बड़ा मजा आया। आज तक वह अपने हमजोलियों के साथ राजकुमार बनकर गलियों में जो खेल खेलता रहा था, आज वह लगभग सच हो रहा था। वह राजमहल में, राजकुमार के कमरे में और राजकुमार की वेश-भूषा में था।

उसे यहाँ आए एक घण्टा हो गया था। राजकुमार एडवर्ड वापस आने को कह गया था किन्तु अभी तक नहीं लौटा था। अकेले टाम को समय गुजारना कठिन हो रहा था। वह कमरे में घूम-फिर एक-एक चीज को देखने लगा। दीवारों पर राजाओं रानियों और राजकुमारों-राजकुमारियों के अनेक चित्र टंगे हुए थे। वह सबको बड़े ध्यान से देखता रहा।

राजमहल के उस एकान्त कमरे में टाम का जी अब कुछ-कुछ घबराने लगा। वह चाह रहा था कि राजकुमार जल्दी से लौट आए तो मैं अपने कपड़े लेकर बाहर भाऊँ। पर वह पता नहीं कहाँ चला गया था। प्रतीक्षा की ये घड़ियाँ टाम को

बड़ी लम्बी मालूम हो रही थी। वह कभी बैठ जाता, कभी उठ खड़ा होता और कभी पहले देखी हुई चीजों को फिर से देखने लगता। उसने सोचा कि 'यदि इस समय कोई राज्याधिकारी या कर्मचारी यहाँ आ जाए और मुझसे पूछे कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो तो मैं क्या कहूँगा और यदि वह पूछेगा कि राजकुमार कहाँ है और तुमने उस के कपड़े कैसे पहन लिए तो मैं क्या उत्तर दूँगा! राजकुमार यहीं हो तो वह बता देता कि उसकी आज्ञा से मैं यहाँ आया हूँ और उसी ने अपने कपड़े पहनने को दिए हैं। मैं उनसे कहूँगा भी तो वे सच कहाँ मानेंगे। इसलिए मुझे यहाँ से चुपचाप निकल जाना चाहिए।'

किन्तु उसने ज्योंही दरवाजा खोला, बाहर चार सन्तरी खड़े पहरा दे रहे थे। उन्होंने झुक-कर टाम को प्रणाम किया।

टाम घबराहट में चीख पड़ा और फिर कमरे में लौट गया। उसने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया।

सन्तरी आश्चर्यचकित होकर एक-दूसरे को

ओर देखने लगे कि राजकुमार को क्या हो गया है। उन्हें क्या पता था कि यह असली राजकुमार नहीं है।

उनमें से एक बोला—"मुझे लगता है कि राजकुमार एडवर्ड की तबीयत ठीक नहीं है।"

दूसरे ने पहले की बात का समर्थन किया।

तीसरे ने कहा—"हमें यह बात राजकुमार की बहनों में से किसी एक को बता देनी चाहिए ताकि वे राजकुमार की देखभाल कर सकें।"

चौथे ने कहा—"ठीक है। मैं राजकुमारी जेन को बता देता हूँ।" और उसने राजकुमारी जेन को बता भी दिया।

राजकुमारी जेन तुरन्त आ गई और उसने दरवाजा खटखटाया तो मारे घबराहट के टाम काँपने लगा। बार-बार दरवाजा खटखटाने पर टाम ने कुण्डी खोली तो राजकुमारी जेन ने कमरे में प्रवेश किया। टाम ने सजी-धजी राजकुमारी को कमरे में आते देखा तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ा।

राजकुमारी जेन भौचक्की रह गई। वह बोली, "भैया, क्या बात है? तुम मेरे पैरों क्यों पड़ रहे हो?"

"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। मैं निरपराध हूँ। मैं तुम्हारा भाई नहीं एक निर्धन बालक हूँ। मेरा नाम टाम है। मैं राजकुमार नहीं हूँ।"

राजकुमारी जेन ने उसे बाँह पकड़ कर उठाया और कुर्सी पर बिठा दिया। टाम की घबराहट बढ़ती ही जा रही थी। वह फिर बोला, "किसी को भेजकर राजकुमार को बुला दीजिए और उसे कहिए कि मेरे कपड़े मुझे लौटा दे।"

राजकुमारी जेन ने समझा कि भैया एडवर्ड बीमार हो गया है और इसकी सूचना पिताजी (राजा हेनरी) को देनी चाहिए। उसने कहा—"मेरे साथ चलो, पिताजी तुम्हें बुला रहे हैं।"

"मेरे पिता! क्या मेरे पिता जान कैटी यहीं कहीं पास ही है।"

राजकुमारी जेन ने टाम की बात को अन-सुना करते हुए उसका हाथ पकड़ लिया और पिता के पास ले चली। गलियारों और बड़े-बड़े कमरों को पार करती हुई वह उसे अपने पिता

राजा के पास ले गई और राजकुमार के अस्वस्थ होने की सूचना दी।

इन दिनों राजा हेनरी स्वयं भी बहुत बीमार था। वह बिस्तर पर लेटा हुआ था। उसने तुरन्त राजकुमार को भीतर बुला लिया। उसने टाम से कहा—"प्यारे बच्चे एडवर्ड! मेरे पास आओ, मुझे बताओ कि तुम्हें क्या कष्ट है?"

टाम ने कहा, "क्या आप ही राजा हैं?"

"हाँ, मैं ही राजा हूँ और मैं तुम्हारा पिता हूँ। तुम घबराए हुए क्यों हो? बात क्या है? मुझे ठीक-ठीक बताओ।"

"महाराज! मैं आपका बेटा नहीं हूँ। मैं राजकुमार नहीं हूँ। मैं तो एक भीख माँगने वाला लड़का हूँ। मेरा नाम टाम है।"

राजा ने क्रोधभरी आँखों से उसकी ओर देखा। फिर बोला, "यह मूर्खतापूर्ण बातें बन्द करो। तुम राजकुमार हो, समझे। यदि तुम कहोगे कि मैं राजकुमार नहीं हूँ तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। क्या तुम जानते हो कि किस किसी पर

मुझे क्रोध आता है, उसकी कैसी दुर्गत बनती है ?"

"हाँ महाराज ! मैं जानता हूँ।" टाम ने कहा।

"तो जाओ और देखो, दोबारा कभी ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें मत करना। समझे। मैं समझता हूँ कि यह जो तुम हर समय पढ़ते रहते हो न, उसी से तुम्हारा दिमाग फिर गया है।"

फिर राजा ने लार्ड हेर्टफोर्ड को आज्ञा दी, "तुम राजकुमार के साथ जाओ। आज नगर में जो राजकीय रात्रि भोज है, उसमें सम्मिलित होने से पूर्व राजकुमार को पूर्ण विश्राम करना चाहिए, वहाँ कई राजकीय मेहमान राजकुमार से भेंट करेंगे। तुम जानते ही हो कि मेरी हालत ठीक नहीं है और राजकुमार जल्दी ही मेरा उत्तराधिकारी बन जाएगा। इसलिए उसे अभी से देश-विदेश के बड़े लोगों के साथ मेल-जोल बढ़ाना चाहिए।"

लार्ड हेर्टफोर्ड टाम को उसके कमरे में छोड़ कर जब राजा के पास लौटकर आया तो राजा

ने कहा, "लार्ड हेटफोर्ड महोदय, मैं जानता हूँ कि मैं अब अधिक दिन जीवित नहीं रहूँगा। पर राज-काज तो ठीक से चलता ही रहना चाहिए। राज-कुमार तो अभी बच्चा है। इसलिए राजाज्ञाओं और कानून का ठीक से पालन होना चाहिए। मैं आपको आज्ञा देता हूँ और अधिकार देता हूँ कि मेरी बीमारी के दिनों में आप राजकीय मोहर का उपयोग करके जैसा उचित समझें वैसा करें। राजकीय मोहर को आप अपने पास रखें और मेरे प्रतिनिधि के रूप में उसका उपयोग करें।"

"जैसी आज्ञा महाराज! आपके वचनों का पूर्णरूप से पालन किया जाएगा।" लार्ड हेटफोर्ड ने कहा, "पर आप श्री राजकुमार को आज्ञा दें कि वे राजकीय मोहर मुझे सौंप दें।"

"ठीक है! मैं अभी इसकी व्यवस्था करता हूँ। आप जाइए और राजकुमार को मेरी आज्ञा सुनाकर उससे मोहर ले आइए।" राजा ने कहा।

लार्ड हेटफोर्ड गए और थोड़ी देर बाद लौट कर राजा से बोले, "महाराज! राजकुमार कहते हैं कि उन्हें नहीं मालूम कि मोहर कहाँ है।"

"क्या वह यह बात कहता है कि उसे नहीं मालूम कि मोहर कहां है।" राजा ने पूछा।

"हां महाराज।" लार्ड हेटफोर्ड ने उत्तर दिया।

"वह बीमार जो है। यही कारण है कि वह मोहर को कहीं रखकर भूल गया है।" राजा ने कहा।

"हां महाराज! यही बात है।" लार्ड ने कहा।

"कोई बात नहीं, थोड़ी प्रतीक्षा करो। राजकुमार के स्वास्थ्य में सुधार होते ही उसे याद आ जाएगा। उसकी बीमारी का ठीक से इलाज होना चाहिए। इसकी तुरन्त व्यवस्था कीजिए। राजकीय डाक्टर को सूचना भिजवा दीजिए।"

एडवर्ड जान कैंटी के चंगुल से छूटा

जब जान कैंटी एडवर्ड को घसीटता हुआ अपने घर की ओर ले जा रहा था तो राह चलते लोग तमाशा देखने खड़े हो गए और हँसने लगे।

राह चलती एक बुढ़िया कहने लगी, "आज-

कल के लड़के बहुत बिगड़ गए हैं। किसी का कहा नहीं मानते हैं।"

जब जान कैटी एडवर्ड को घसीटता-घसीटता अपनी झोंपड़ी के कुछ पास जा पहुंचा तो एक बूढ़ा आदमी जान कैटी से बोला, "इसे छोड़ दो। तुम तो इस लड़के की जान ही निकाल दोगे। इसे छोड़ दो।"

"अरे बुड्ढे! तुम कौन होते हो हमारे बीच बोलने वाले!" जान कैटी ने यह कहते हुए उस बुड्ढे के सिर एक घूंसा दे मारा। बेचारा बुड्ढा गिर पड़ा और तमाशा देखने वाली भीड़ उसके ऊपर से निकल कर जान के पीछे चलती रही।

जान कैटी ने एडवर्ड को झोंपड़ी के दरवाजे पर जा पटका। वह अपनी पत्नी से बोला, "संभालो अपने लाड़ले को। इसने आज एक पैसा भी भीख नहीं मांगी। और इसका दिमाग और खराब हो गया। उल्टी-सीधी बातें कर रहा है। कहता है, मैं राजकुमार हूं। राजकुमार एडवर्ड। तुम्हारा बेटा आज राजकुमार बन गया है। अब तुम भी इसे राजकुमार ही कहा करो। अरा

इससे बात करके तो देखो, यह क्या कहता है।"

टाम की माँ घबराई हुई लपक कर एडवर्ड के पास आई। बोली, "तुमने इस बेचारे की मार-मार कर क्या हालत कर दी है। बोल बेटे, क्या बात है। तुम्हारी तबियत तो ठीक है न ?"

इतने में टाम की बुढ़िया दादी बोल पड़ी, "वह बेचारा बेटा है। दिन-भर आवारागर्दी करता है। एक पैसा भीख का घर में नहीं लाता। फिर भी यह बेचारा है !" वह व्यंग्य से हँसी।

जान कैंटी का क्रोध तो अभी भी नहीं उतरा था। उसने पड़े हुए एडवर्ड पर एक लात और जमाई।

एडवर्ड बोला, "मैं टाम नहीं, एडवर्ड हूँ। राजकुमार एडवर्ड। मुझे महल में पहुँचा दीजिए। वहाँ आपका टाम आपको मिल जाएगा।"

इतने में क्या हुआ कि जान कैंटी की झोंपड़ी के बाहर से किसी ने पुकारा।

जान कैंटी ने बाहर निकल कर देखा तो वह उसका मित्र नेड था। उसने बताया, "जान क्या तुम जानते हो कि लड़के को छुड़ाने आए जिस

आदमी को तुमने सिर में घूंसा दे मारा था, वह कौन है ?"

"कोई मूर्ख था जो खामखाह दूसरे की बात में दखल दे रहा था।" जान ने कहा।

"अरे वह तो हमारा पड़ोसी बूढ़ा पादरी था। तुम्हारे घूंसे से उसके तो प्राण ही निकल गए। तुमने उस बेचारे को बिना बात के मार डाला। अबअगर अपनी खैर चाहते हो तो यहाँ से तुरन्त भाग जाओ।" जान के मित्र नेड ने कहा।

"बूढ़ा पादरी मर गया ?" मारे डर के यह कहते हुए जान की जबान लड़खड़ा गई और पसीना छूटने लगा।

फिर उसने अपनी पत्नी और बुढ़िया को सुनाते हुए कहा, "यह तो बहुत बुरा हुआ। कितने लोगों के सामने मैंने उसे मारा था। वे कचहरी में जाकर मेरे विरुद्ध गवाही दे देंगे तो मुझे हत्या के अभियोग में फाँसी पर लटका दिया जाएगा। अब यहाँ से भाग निकलने में ही भला है। मैं टाम को लेकर चलता हूँ। तुम माँ और लड़कियों को साथ लेकर लन्दन पुल पर

आ जाओ। वहाँ मैं तुम सब की प्रतीक्षा करूँगा। जल्दी से आना। देर मत करना।

जान कैंटी ने एडवर्ड की बाँह पकड़ी और जल्दी-जल्दी पग बढ़ाता तंग गलियों में से निकल चला। रात के अन्धेरे में किसी ने उसे पहचाना नहीं और वह चलता गया। जब वह बड़े भवन के पास पहुँचे तो वहाँ बड़ी भीड़ जमा थी। खूब सजावट की गई थी और बत्तियों के प्रकाश से सारी सड़क जगमग हो रही थी। आज यहीं पर राजकुमार के सम्मान में एक विशाल समारोह और राजकीय भोज का आयोजन किया गया था।

जान कैंटी ने वहाँ खड़े एक आदमी से पूछा, "आज यहाँ कौन-सा तमाशा होने वाला है। यह भीड़ क्यों जमा है?"

"अरे तुम्हें इतना भी पता नहीं, हम यहाँ राजकुमार एडवर्ड के स्वागत और दर्शनों के लिए खड़े हैं। वे यहाँ एक स्वागत समारोह में पधार रहे हैं। तुम कौन हो और कहाँ भागे जा रहे हो। आओ, कुछ खाओ-पियो और राजकुमार की

दीर्घायु की कामना करो।" उस आदमी ने जान कैंटी को खाने-पीने का सामान पकड़ा दिया। उसे एडवर्ड की बाँह को छोड़ना पड़ा। एडवर्ड ने देखा कि यह भागने के लिए अच्छा अवसर है। उस भीड़-भाड़ में एक लड़के को ढूँढना सरल नहीं था। जान कैंटी ज्यों ही खाने-पीने में मस्त हो गया, एडवर्ड चुपके से खिसका और भीड़ में जा छुपा।

जब जान कैंटी को ध्यान आया कि लड़का नहीं है तो वह इधर-उधर ढूंढने लग गया, वहाँ क्या पता लगता था।

एडवर्ड ने सोचा कि मेरे साथ तो बड़ा धोखा हुआ। टाम, जिसे मैंने दो घड़ी के लिए अपने कपड़े पहनने को दे दिए थे, वह सब लोग राज-कुमार एडवर्ड समझ रहे होंगे और वह भी राज-कुमार बना मौज लूट रहा होगा। और मैं तो उसके कपड़े पहन कर भारी विपत्ति में फंस गया। जैसे उसके घर के लोग मुझे नहीं पहचान सके, वैसे राजमहल के लोग उसे भी नहीं पहचान सके होंगे। वह आज नकली राजकुमार टाम का भण्डाफोड़ करके दिखा देगा।

रात्रि भोज

लन्दन नगर के धनी-मानी, विद्वान् और प्रतिष्ठित नागरिक इस रात्रि भोज में पधारे हुए थे। लम्बी-लम्बी मेजों पर विविध प्रकार के भोजन, फल और मिठाइयाँ सजी हुई थीं। पीने के भी कई तरह के शर्बत आदि वहाँ रखे हुए थे।

राजकुमार धना टाम ज्यों ही वहाँ पहुँचा, सभी उठ खड़े हुए। जब विशेष रूप से राजकुमार के लिए सजी भोजन की मेज के सामने जा बैठा तो सभी अपनी-अपनी जगह बैठ गए। भोजन प्रारंभ हुआ। लोग हँसते-बोलते भोजन करने लगे। एक ओर मंच पर बैठे गायकों ने गाना प्रारंभ कर दिया और नाचने वालों की मण्डली नाचने लगी।

एडवर्ड भी भोजन-स्थान के बाहरी द्वार पर जा पहुँचा। वहाँ सन्तरी पहरे पर खड़े थे ताकि कोई ऐरा-गैरा नत्थू खैरा भीतर न घुस जाए। उसने सन्तरियों से कहा, "मैं राजकुमार एडवर्ड हूँ। दरवाजा खोलो और मुझे भीतर जाने दो।" पर फटे-पुराने कपड़े पहने एडवर्ड की बात पर

कोई क्यों विश्वास करता। इस तरह का लड़का भी राजकुमार हो सकता है यह कल्पना के बाहर की चीज़ थी। सन्तरी भिखमंगे जैसे उस लड़के की बात सुनकर आपस में हंसने लगे।

एडवर्ड को अपनी उपेक्षा होते देखकर क्रोध आ गया। वह तनकर और गरजकर बोला, "मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि दरवाज़ा खोलो और मुझे भीतर जाने दो।"

उनमें से एक सन्तरी बोला, "मूर्खता की बातें मत करो। पीछे चलो। आगे आने का प्रयत्न किया तो तमाचा पड़ेगा।"

किन्तु एडवर्ड सन्तरियों पर और भी बिगड़ पड़ा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। वहां हल्ला सुनकर बहुत से लोग इकट्ठे हो गए और लड़के पर बिगड़ने लगे।

भीड़ में से कोई बोला, "लगता है, यह लड़का पागल है। इसे कान पकड़कर उधर छोड़ आओ।"

कोई दूसरा बोला, "ओ लड़के! जा अपने घर। भाग जा यहाँ से। तुझे तो इस भोजन की

गुठन भी नहीं मिलेगी।"

तीसरा बोला, "जब भोज समाप्त होगा और राजकुमार बाहर निकलेंगे तो हम उनके दर्शन करेंगे। इस भिखमंगे को यहाँ से भगाओ, यह खामखाह हल्ला मचा रहा है।"

पर एडवर्ड ने उनकी एक नहीं मानी। वह बोला, "मैं नहीं जाता। मैं तुम्हें फिर बता देना चाहता हूँ और चेतावनी देता हूँ कि मैं राजकुमार एडवर्ड हूँ। दरवाजा खोल दो और मुझे भीतर जाने दो। इस समय यहाँ मुझे पहचानने वाला कोई नहीं है पर भीतर मेरी बात की सचाई को जानने वाले कई लोग विद्यमान हैं। तुम लोग भी मेरी बात पर विश्वास करो। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह सोलह आने सच है। ऐसा न हो कि आज मेरी बात न मानने के लिए कल आपको पछताना पड़े।

भीड़ में लोग इस लड़के की जिद पर क्रुद्ध होकर मार-पीट करने को तैयार हो गए। पर एडवर्ड वहाँ से नहीं हटा। तब भीड़ में से एक आदमी ठीक एडवर्ड के पास आकर खड़ा हो

गया। वह बोला, "मुझे इस बात की रत्ती भर परवाह नहीं है कि तुम राजकुमार हो या नहीं, मुझे इस बात से भी कोई मतलब नहीं कि तुम पागल हो या ठीक। पर मैं मानता हूँ कि तुम बहादुर लड़के हो और मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

इस आदमी का नाम था माइल्स। यह कुछ पहले ही युद्धभूमि से लौटकर आया था और अपने गाँव को जाता रास्ते में तमाशा देखने खड़ा हो गया था। भीड़ इस जरा से लड़के की जिद को देख कर और भी ज्यादा क्रुद्ध हो गई थी और मारने पर उतारू थी। माइल्स ने भीड़ को रोकने का प्रयत्न किया किन्तु जब भीड़ नहीं रुकी तो उसने अपनी तलवार खींच ली। उसने एक आदमी पर तलवार से वार कर दिया। इतने में भीड़ में से आवाजें आने लगीं, 'मारो, इन दोनों को मारो।' भीड़ ने पथराव शुरू कर दिया और एक पत्थर एडवर्ड की आकर लगा। वह जख्मी होकर गिर पड़ा। जहाँ पत्थर लगा था, वहाँ से रक्त की धार बहने लगी। माइल्स ने एडवर्ड को अपनी

दोनों के बीच कर लिया ताकि भीड़ उसे कुचल न दे और स्वयं तलवार से भीड़ का सामना करने लगा। पर माइल्स अकेला था और भीड़ में सैकड़ों लोग थे। माइल्स को लग रहा था कि आज जान से हाथ धोने पड़ेंगे। उसने कहा, "किसने सोचा था कि फ्रांस के साथ लड़ी गई सात साल की लड़ाई में भी जीवित बचकर मैं लन्दन की एक भीड़ द्वारा मारा जाऊँगा।"

इतने में क्या हुआ कि एक घुड़सवार की आवाज सुनाई दी कि 'राजा के सन्देशवाहक के लिए रास्ता छोड़ो।' यह सुनते ही भीड़ पीछे हट गई और सन्देशवाहक भीतर चला गया।

सन्देशवाहक सीधा वहाँ पहुँचा, जहाँ टाम बैठा था। वहाँ पहुँचकर वह घुटनों पर झुका और निवेदन किया "श्रीमान् आपके पिता महाराज की मृत्यु हो गई है।" फिर वह उठ खड़ा हुआ और चिल्ला कर बोला, "राजा हेनरी आठवें स्वर्ग सिधार गए हैं। राजा एडवर्ड दीर्घायु हों।"

फिर वहाँ एकत्र सभी व्यक्ति एक साथ चीख पड़े, 'राजा एडवर्ड दीर्घायु हों।'

माइल्स ने घायल एडवर्ड को उठाया और अन्धेरी गलियों में से होता चल पड़ा।

सराय में

माइल्स और एडवर्ड भीड से निकलकर पास की एक सराय की ओर चल पड़े। वे दोनों थके हुए और भूखे थे। उन्हें आराम की आवश्यकता थी। जब वे दोनों सराय की ओर चले जा रहे थे तो उन्होंने रास्ते में लोगों को कहते सुना कि 'राजा हेनरी मर गए। राजा एडवर्ड दीर्घायु हों।'

एडवर्ड यह सुनकर चलते-चलते रुक गया। माइल्स ने उससे पूछा "लड़के! तुम रुक क्यों गए?"

"अब से मैं राजा बन गया हूँ।" एडवर्ड ने उत्तर दिया।

उस पर व्यंग्य कसते हुए माइल्स ने कहा, "राजकुमार या राजा? मेरे लिए दोनों बातें बराबर हैं। तुम एक बहादुर लड़के हो और इसी लिए मैं तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ। मेरे साथ सराय तक चलो। वहाँ खाना खाएँगे और सोएँगे।

लड़ाई झगड़े के कारण मुझे जोर की भूख लग आई है।"

माइल्स ने सराय में एक कमरा ले रखा था। ज्यों ही वे सराय में पहुँचे एडवर्ड को एक परिचित स्वर सुनाई दिया। "तो तुम आ ही गए।" यह जान कैटी की आवाज थी। तुमने आज जो मुझे छकाया है, उसके लिए मैं अभी तुम्हारी खबर लेता हूँ।" इसने एडवर्ड को पकड़ने के लिए बाँह बढ़ाई।

माइल्स ने एडवर्ड को अपने पीछे छिपा लिया और जान कैटी से बोला, "तुम कौन हो? और यह लड़का तुम्हारा क्या लगता है?"

"यह मेरा बेटा है।" जान ने उत्तर दिया।

"यह झूठ बोलता है।" एडवर्ड ने विरोध किया।

"क्या तुम इस आदमी के साथ जाना चाहते हो?" माइल्स ने लड़के से पूछा।

"नहीं! नहीं!! नहीं!!!" एडवर्ड ने जोर से कहा। "यह मेरा पिता नहीं है। इसके पास जाने से तो मैं मर जाना अच्छा समझता हूँ।"

"तब तुम इसके साथ नहीं जाओगे।" माइल्स
कहा।

"पर मैं कहता हूँ, यह मेरे ही साथ जाएगा।"
ान कैंटी ने अपनी कर्कश आवाज में चिल्लाकर
हा और उसने एडवर्ड को पकड़ने को लिए फिर
ाथ बढ़ाया।

माइल्स ने भी अपना हाथ तलवार की मूठ
र रख दिया। "अगर तुम आगे बढ़े तो मैं इस
लवार को तुम्हारे पेट में घुसेड़ दूंगा। अब तुम
रे सामने से हट जाओ। अब दोबारा तुम्हारी
कल मुझे नहीं दिखाई देनी चाहिए। जाओ!
ागो!!" माइल्स ने जान को धमकाते हुए कहा।

जान कैंटी डर गया और वहाँ से चला गया।
ाइल्स और एडवर्ड सराय के कमरे में गए।
ीतर घुसते ही एडवर्ड पलंग पर लेट गया। उसने
ाइल्स से कहा, "जब भोजन आ जाए तो मुझे
गा लेना।"

माइल्स को उसकी बात पर हंसी आ गई।
उसने कहा, "राजकुमार, आप ठीक कहते हैं।
आप सोइए और मैं आप के नौकरों को आपके

लिए भोजन तैयार करने को कह देता हूँ।

वह सराय के होटल में गया और थालियों में भोजन ढलवा कर कमरे में ले आया। "राजकुमार जी, आपका भोजन आ गया है। उठ खड़े होइए।" व्यंग्य से मुस्कराते हुए माइल्स ने कहा

"धन्यवाद।" एडवर्ड ने कहा।

"तो फिर उठिए और भोग लगाइए। माइल्स ने फिर व्यंग्य कसा।

"पहले मैं हाथ धोऊँगा, तब भोजन करूँगा। एडवर्ड ने बड़े रोब से कहा। उसने हाथ धो और भोजन करने बैठ गया। तभी माइल्स भी भोजन के लिए बैठने लगा तो एडवर्ड ने उसे बैठने से रोक दिया। "ठहरो, क्या तुम इतना भी नहीं जानते हो कि जब तक राजा बैठने की आज्ञा न दे, तब तक नहीं बैठना चाहिए। खैर, अब तुम बैठ सकते हो।"

माइल्स मुस्कराता हुआ बैठ गया और वे भोजन करने लगे।

"अच्छा, अब तुम मुझे अपना पूरा परिचय दो। तुम्हारा नाम क्या है? क्या करते हो और कहाँ रहते हो?" एडवर्ड ने माइल्स से पूछा।

"मेरा नाम माइल्स है," उसने उत्तर दिया, मैं हैण्डन हाल में रहता हूँ। मेरी कुमारी एडिथ विवाह करने जा रहा हूँ। मेरे छोटे भाई ने, रे पिता से मेरे सम्बन्ध में कुछ झूठ-मूठ कह दिया जिसके कारण मैं फौज में भर्ती होकर लड़ाई मोर्चे पर चला गया था। मैं सात साल देश से बाहर मोर्चे पर लड़ता रहा हूँ। मेरा विचार है, तने दिनों तक घर से बाहर रहने के कारण अब रा छोटा भाई मुझे घर और जमीन का हिस्सा हीं देगा।"

"माइल्स! चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे ाई को आज्ञा दूंगा कि वह तुम्हारा हिस्सा म्हें लौटाए और मैं राज्य की ओर से भी तुम्हें नाम में जमीन दूंगा।" एडवर्ड ने कहा, "तुमने पने राजा की अच्छी सेवा की है। अपनी तल-ार मेरे पास दो। घुटनों के बल झुककर मेरे ामने बैठ जाओ। मैं तुम्हें सर की उपाधि ूंगा।"

माइल्स ने वैसे ही किया। एडवर्ड ने तलवार माइल्स की पीठ पर रख दी और उसे सर

माइल्स' कहकर सम्बोधित किया।

माइल्स जब उठ खड़ा हुआ तो उसने ठहाका लगाते हुए कहा, "तो आज से मैं 'सर माइल्स' हो गया हूँ।"

"हाँ, इसमें क्या सन्देह है।" एडवर्ड ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया।

जहाँ वे कुर्सी पर बैठे थे, एडवर्ड वहीं अपना सिर मेज पर टिकाकर सो गया। माइल्स ने उसे उठाया और पलंग पर लिटा दिया।

वह बड़बड़ाया, "बेचारा लड़का बुरी तरह थक गया है। पत्थर की चोट से जो घाव हुआ था, उसमें से खून भी बहुत निकला है। मेरा विचार है गहरी नींद के बाद इसका दिमाग ठीक हो जाएगा और यह अपने को राजा या राजकुमार कहना बन्द कर देगा।

माइल्स स्वयं जमीन पर ही सो रहा क्योंकि कमरे में एक ही चारपाई थी और दूसरी चारपाई को बिछाने की जगह भी नहीं थी।

भोर होते ही माइल्स जग पड़ा। उसकी दृष्टि बिस्तर पर सोए एडवर्ड पर पड़ी तो उसने देखा

कि इसके कपड़े तो बहुत गन्दे हैं। पिछले दिन स्कूल के लड़कों ने एडवर्ड को गन्दे नाले में फेंक दिया था, जिसके कारण वे बहुत गन्दे हो गए थे। फटे हुए तो वे पहले ही थे। उसने सोचा, 'अपने इस राजकुमार के लिए नए कपड़े खरीदने चाहिएं' और वह कुछ कपड़े खरीदने बाजार चला गया।

कोई घंटे भर बाद माइल्स कपड़े खरीद कर लौटा और दरवाजा खोलकर अपने कमरे में गया तो एडवर्ड वहाँ नहीं था।

वह भागकर सराय के मालिक के पास गया और उससे पूछा कि लड़का कहाँ गया?

"वह आदमी था न रात वाला जो कहता था कि यह मेरा लड़का है, वही उसे लिवा ले गया।"

माइल्स ने अपना सामान वहीं सराय का बिल चुकता किया और लड़के को खोजने निकल पड़ा।

राजमहल में

टाम केन्टमिलिस्टर के राजमहल में पलंग पर सोया हुआ था। प्रभात हो चुका था। सूर्य का गोला पूर्व दिशा में दौड़ने लगा था। दो राजकुल

उसके बिछौने के पास खड़े होकर धीरे-धीरे कह रहे थे, "महामहिम महाराज! आठ बज रहे हैं।"

पहले तो टाम ने समझा कि वह अपने झोंपड़े में सोया पड़ा है और उसकी माँ उसे जगा रही है। पर जब उसने आँखें खोलीं और सामने खड़े दो राजपुरुषों को देखा तो उसका भ्रम जाता रहा। पर यह 'महामहिम महाराज' की बात उसकी समझ में नहीं आई।

"आप क्या कह रहे हैं?" टाम ने प्रश्न किया।

"क्या महामहिम महाराज अब बिछौने से उठना चाहेंगे?" एक राजपुरुष ने नम्रतापूर्वक पूछा।

"क्या आपके पूछने का यह अभिप्राय है कि मैं उठना चाहता हूँ या नहीं?" टाम ने बात को स्पष्ट रूप से समझने के लिए कहा।

"जी, महामहिम महाराज!" एक राजपुरुष ने कहा।

"हाँ, अब मैं उठना चाहता हूँ। मेरे कपड़े लाओ।" टाम ने आज्ञा के स्वर में कहा।

उन्होंने कपड़े लाकर दे दिए, उन्हें पहनने में टाम की सहायता करने लगे।

अब राजकीय वेश-भूषा पहनकर टाम आस-पास के लिए दूसरे कमरे में गया। वहाँ एक बढ़िया मेज पर उसके लिए चाय और नाश्ता परोसा गया। टाम के आस-पास नौकरों-चाकरों की भीड़ लगी हुई थी जो उसकी किसी भी आज्ञा का पालन करने में तत्पर थे।

जब टाम नाश्ता कर चुका तो एक राज-कर्मचारी ने आकर सूचना दी कि महामहिम महाराज से लार्ड हेर्टफोर्ड कुछ बात करना चाहते हैं। फिर लार्ड हेर्टफोर्ड भीतर आए और बोले, "यदि महामहिम महाराज तैयार हों तो राज-दरबार में चलने की कृपा करें।"

लार्ड हेर्टफोर्ड टाम को राजदरबार में ले गए और वहाँ एक विशाल कक्ष के एक ओर, मध्य में रखे ऊँचे स्वर्ण जटित सिंहासन पर ले जाकर बिठा दिया। लोग आते, झुककर प्रणाम करते और राजकाज से सम्बन्धित कागजों को पढ़ कर महाराज को सुनाते। घंटों यही क्रम चलता रहा।

टाम ने सोचा, 'यह व्यर्थ का झमेला न जाने कब समाप्त होगा। मेरा जी चाहता है कि मैं यहाँ से जा सकता तो गेंद खेलता या नदी में तैरता।'

इसी तरह दोपहर का समय हो गया। राज-दरबार की कार्यवाही रोक दी गई। भोजन का समय हो गया था। टाम जब सिंहासन से उठा तो सभी उठ खड़े हुए। उसके वहाँ से बाहर निकल जाने के बाद ही अपने स्थान से हिले। टाम को भोजन के लिए एक विशाल कक्ष में ले जाया गया। वहाँ भी नौकरों-चाकरों की भीड़ जमा थी जो इधर से उधर आ जा रहे थे। भोजन में विविध प्रकार के स्वादिष्ट पकवान, मिठाइयाँ, फल और शर्बत परोसे गए। खाने की चीजों का कोई अन्त नहीं था। लोग बहुत धीरे-धीरे खा रहे थे और बातें करते जाते थे। कितनी ही देर में यह भोज समाप्त हुआ। टाम का जी उकताने लगा। वह तो बाग का स्वतन्त्र पंछी जो अपनी इच्छा से जहाँ चाहता, आता-जाता। वहाँ उसकी स्थिति पिंजरे में बन्द पंछी की तरह हो गई थी।

उसने सोचा तो कि भोजन के बाद सम्भवतः उसे खेलने-कूदने की छुट्टी मिल जाएगी पर मिली नहीं। वहाँ से फिर एक अन्य कक्ष में ले जाया गया। वहाँ ढेर से कागज रखे हुए थे, जिन पर महाराज के हस्ताक्षर होने थे। उसे उन पर एडवर्ड नाम से हस्ताक्षर करने थे। उसे कुछ पता नहीं था कि इन कागज-पत्रों में क्या लिखा है, हस्ताक्षर करने से क्या अभिप्राय है। उसे इस बात की परवाह भी नहीं थी।

इसी झमेले में शाम हो गई। शाम को फिर रात्रि भोज का आयोजन था। उससे निबट कर जब वह सोने के लिए अपने शयनकक्ष में गया तो सोचने लगा, 'यहाँ बहुत बढ़िया कपड़े पहनने को मिल रहे हैं। मकान भी बहुत बढ़िया है और भोजन के तो कहने ही क्या! पर यहाँ मैं अपनी इच्छा से कोई भी काम नहीं कर सकता हूँ। यहाँ न खेलने के लिए साथी हैं, न खेलने को समय। न किसी से गप-शप का समय है न घूमने-फिरने का। इस तरह का राजा बनना मुझे कतई पसन्द नहीं है। मेरे लिए तो अपना वही झोंपड़ा भला और गली-मुहल्ले के वही मित्र अच्छे।'

जब माइल्स ने उस दिन प्रातः एडवर्ड के गन्दे कपड़े देखे और उसे सोया छोड़कर उसके लिए कपड़े खरीदने बाजार चला गया तो एक आदमी ने उसे जगाया और कहा कि तुम्हें माइल्स बुला रहा है। एडवर्ड को वह आदमी भला नहीं लगा। वह गन्दा था और सीधा न देखकर कनखियों से देखता था।

"तुम्हें किस ने भेजा है ?" एडवर्ड ने पूछा।

"माइल्स ने।" आने वाले ने कहा।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" एडवर्ड ने दूसरा प्रश्न किया।

"मुझे हुगो कहते हैं ?" उसने उत्तर दिया।

"माइल्स ने क्या कहा है ?"

"उसने कहा है कि लड़के को कहो कि मेरे पास चला आए।"

"उसे कह दो, मैं उसका राजा हूँ। मैं जब उसको अपने पास आने की आज्ञा दूँ तभी वह मेरे पास आए।"

"वह घायल हो गया है। उसने कहा है कि

आकर मेरी सहायता करो।"

"ओह! वह घायल हो गया है। तो मैं चलता हूँ। वह मेरा सच्चा सेवक है। मैं उसकी सहायता अवश्य करूँगा।" एडवर्ड ने उत्तर दिया।

वह अपरिचित नौजवान एडवर्ड को नगर से दूर ग्रामीण इलाके में ले गया। वे चलते गए और चलते चले गए।

बड़ी देर तक चलते रहने के बाद एडवर्ड ने पूछा, "सर माइल्स कहाँ है?"

"यहाँ से थोड़ी ही दूर आगे है?" ह्यूग नामक उस नौजवान ने कहा, "वह उस जंगल में है।"

वे दोनों जंगल में जा पहुँचे। वहाँ वृक्षों के झुरमुट में एक झोंपड़ी थी। वे उसके पास जा पहुँचे।"

ह्यूग ने झोंपड़ी का दरवाजा खोल दिया और एडवर्ड भीतर चला गया।

"तो तुम आखिर आ ही गए।" झोंपड़ी के भीतर बैठे जान केंटी ने कहा, "तुम अपने पिता की सहायता करने के लिए आ ही गए जो यहाँ

जंगल में छिपा बैठा है। मेरे हाथों उस बूढ़े पादरी की हत्या हो गई है जो तुम्हें पढ़ाता था। अब पुलिस मेरे पीछे पड़ी है और मुझे भाग कर यहां छिपना पड़ा है।"

"सर माइल्स कहां है?" एडवर्ड ने पूछा, "मुझे उसके पास ले चलो।"

"मुझे पता नहीं, तुम्हारा वह मित्र कहां है। मैं जानता हूँ कि तुम उसे बहुत प्यार करते हो। इसीलिए मैंने हूगो से कह दिया कि तुम उसका नाम ले देना। अब तुम हूगो के साथ-साथ जाओ और भीख मांगकर मेरे लिए रोटी-पानी की व्यवस्था करो। भीख मांगना तो तुम जानते ही हो। हूगो तुम्हारे साथ रहेगा और तुम पर नजर रखेगा कि तुम कहीं भाग न जाओ। क्या तुम विपत्ति में फंसे अपने पिता के लिए इतना काम भी नहीं करोगे।" जान कैंटी ने कहा।

× × ×

हूगो एडवर्ड को जंगल के दूसरे छोर की सड़क पर से, भीख मांगने ले गया।

"यहां खड़े हो जाओ।" उसने एडवर्ड को

जगह दिखाते हुए कहा, "कुछ बातें बताता हूँ, उन्हें समझ लो और जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करो। मैं तुम्हारा भाई हूँ और मैं बहुत बीमार हूँ। जल्दी ही इस रास्ते कोई राहगीर आएगा। मैं दर्द के मारे कराहने लगूँगा और तुम उसके पास जाकर कहना, 'यह बेचारा मेरा भाई बीमार पड़ा हुआ है। हमारे पास न तो दवादारू के लिए पैसे हैं न भोजन के लिए। भगवान के नाम पर हमारी कुछ सहायता कीजिए।' वह देखो कोई चला आ रहा है। जल्दी से रोनी सूरत बनाकर खड़े हो जाओ।"

हुगो स्वयं तो सड़क के किनारे नंगी धरती पर लेट गया और कराहने लगा, "हाय! हाय!! हाय माँ! मेरी जान निकली जा रही है। पानी! पानी!! पानी!!!" वह हाथ-पैर पटक कर छटपटाने लगा।

राहगीर उसके पास आकर बोला, "लड़के, बोलो मैं तुम्हारी क्या सहायता करूँ?"

कराहते हुए हुगो ने कहा, "मेरे भाई को कुछ पैसे दे दीजिए, ताकि यह मेरे लिए कुछ

इलाज करा सके।"

"पर तुम तो बहुत बीमार लगते हो। मैं तुम्हें ऐसी हालत में छोड़कर नहीं जा सकता। तुम्हारा यह छोटा भाई और मैं तुम्हें किसी घर तक ले चलते हैं। वहाँ तुम्हारी ठीक-से देख-भाल हो सकेगी। यहाँ सड़क के किनारे पड़े-पड़े कैसे काम चलेगा।" वह एडवर्ड की ओर घूम गया और बोला, "लड़के! इधर आओ, मेरी सहायता करो। तुम्हारे इस बीमार भाई को हम किसी घर तक ले चलते हैं, ताकि वहाँ इसकी ठीक देखभाल हो सके।"

"मैं राजा हूँ।" एडवर्ड ने कहा, "यह मेरा भाई नहीं है। यह भिखमंगा और चोर है। यह बीमार नहीं है। बीमारी का तो बहाना है।"

राहगीर ने हुगो की ओर देखा और बोला, "अच्छा, तो यह बात है। बीमारी के बहाने पैसे ऐंठना चाहता है। मैं इसे पुलिस के हवाले करूँगा तब इसे लोगों को ठगने का उचित दण्ड मिलेगा। लड़के! तुम मेरे साथ पुलिस चौकी चलो और इसकी रपट लिखवाओ नहीं तो यह बदमाश तुम्हें

मार डालेगा।"

ह्यगो उठा और भाग गया। पास ही जंगल था। वह उसमें घुस गया। ये दोनों देखते के देखते रह गए।

राहगीर अपने रास्ते चला गया और एडवर्ड भी अपने को चंगुल से छूटा समझकर बस्ती की ओर चल पड़ा। वह सोचने लगा, "अब दोबारा मैं उन बदमाशों की कभी सूरत भी नहीं देखूँगा। यह जान कैंटी तो बड़ा ही धूर्त आदमी है। हे भगवान् ! कैसे-कैसे बदमाश लोग इस देश में हैं।"

वह अकेला अपने विचारों में खोया अभी कुछ ही दूर गया था कि ह्यगो फिर जंगल से निकल आया और उसने एडवर्ड को पकड़ लिया। ह्यगो बोला, "तो तुम मुझे फँसाना चाहते थे, हम लोगों को फँसाना उतना आसान नहीं है, जितना तुम समझते हो मैं तुम्हें इस बात का मजा चखाऊँगा कि बदमाशों की शिकायत करने का क्या परिणाम होता है।" वह एडवर्ड के साथ-साथ चलने लगा और एडवर्ड को तंग करने का उपाय भी

सोचने लगा। वे कसबे में आ पहुँचे। वहाँ बाजार में लोगों की खूब भीड़ थी। कुछ खरीदारी कर रहे थे और कुछ सौदा लेकर जा रहे थे। एक महिला अपनी टोकरी में एक मोटी मुर्गी रखकर ले जा रही थी। हुगो ने राह में पड़ा पत्थर उठाया। उसने एक हाथ से वह पत्थर चुपचाप टोकरी में रख दिया और दूसरे हाथ से वह मरी मुर्गी उठा ली। टोकरी में मुर्गी के लगभग बराबर के भार का पत्थर आ जाने से महिला को कुछ पता नहीं चला। हुगो मुर्गी को ले भागा और वह मुर्गी उसने एडवर्ड को थमा दी। मुर्गी एडवर्ड के हाथ में जाते ही हुगो ने 'चोर-चोर' का शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया।

टोकरी वाली महिला का ध्यान भंग हुआ। जब वह उस ओर देखने लगी, जिधर से 'चोर-चोर' की आवाज आ रही थी तो उसने अपनी मुर्गी एडवर्ड के हाथों में देखी। अब तो उस महिला ने भी 'चोर-चोर' का शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया। 'पुलिस को बुलाओ, कोई भागकर सिपाही को बुला लाओ' यह शोर मच गया।

"इस कसबे में चोरियाँ बहुत होने लगी हैं। लगता है कि चोरों का कोई गिरोह यहाँ आ गया है।" भीड़ में से कोई बोला।

दूसरे ने कहा, "पुलिस भी चोरों से मिली हुई है। तभी तो वह इन्हें पकड़ती नहीं है।"

तीसरे ने कहा, "पुलिस की जरूरत ही क्या है। हमीं मार-मार कर इसका भुर्ता बना डालेंगे।"

एडवर्ड ने घोड़े के आने की आवाज सुनी। जब उसने उधर देखा तो माइल्स घोड़े पर चढ़ा चला आ रहा था।

उसने जोर से पुकारा, "सर माइल्स! सर माइल्स!! मेरी सहायता करो।"

माइल्स भीड़ के पास पहुँचा तो उसने वहाँ एडवर्ड को देखा। "तो आखिर तुम मुझे मिल ही गए।" माइल्स ने कहा, "मामला क्या है?"

"यह महिला कहती है कि मैंने इसकी मुर्गी चुराई है।" एडवर्ड ने कहा।

महिला बोली, "हाँ, ठीक है। इसने मेरी

टोकरी से मुर्गी उठाई है। यह रही वह मुर्गी।"

माइल्स ने कहा, "बड़ी मोटी मुर्गी है। ऐसी ही मुर्गी लाने के लिए मैंने तुम्हें भेजा था। पर तुम्हें महिला से पूछना चाहिए था कि वह मुर्गी को बेचेगी या नहीं?"

माइल्स उस महिला को एक ओर ले गया। उससे बोला, "मेरा यह नौकर कुछ मूर्ख-सा है। इसके दिमाग की चूल कुछ ढीली है। यह कहता है कि मैं राजा हूँ। इसलिए इस पगले से आप इतनी कठोरता का व्यवहार न करें। मेरा विचार है कि मुर्गी की कीमत इसने आपकी टोकरी में डाल दी होगी। जरा मुझे टोकरी को देख लेने दीजिए।"

माइल्स ने मुर्गी की कीमत जितने पैसे पहले ही हाथ में ले रखे थे। उसने टोकरी में हाथ डाला और निकाल कर बोला, "यह रहे पैसे। पूरे पांच शिलिंग हैं। आपको इसे चोर नहीं कहना चाहिए और अब तो यह प्रमाणित हो गया है कि यह चोर नहीं है।"

महिला बोली, "ओह ! यह बात है ? तो
ों ले आओ। मुझे कीमत नहीं चाहिए।"
न्तु माइल्स ने पाँच शिलिंग उसकी टोकरी में
ल ही दिए।

माइल्स ने एडवर्ड को अपने साथ घोड़े पर
ठाया और चल दिया।

"तुमने मुझे कैसे खोजा ?" एडवर्ड ने माइल्स
पूछा।

"मुझे सराय में एक यात्री मिला। उसने
झे दो भिखमंगों की बात सुनाई जिनमें एक अपने
आपको राजा बताता था और दूसरे भिखमंगे के
ारे में कहता था कि यह मेरा भाई नहीं है।
नी से मैंने अनुमान लगा लिया कि उन दो में
एक अवश्य तुम होओगे।" माइल्स ने उत्तर
दिया।

"अब हम कहाँ जा रहे हैं ?" एडवर्ड ने दूसरा
श्न किया।

माइल्स ने कहा, "अपने गाँव।"

"अच्छी बात है। कुछ दिन तुम्हारे गाँव में
रहूँगा। किन्तु उसके बाद मैं शीघ्र ही लन्दन

के वेस्टमिनिस्टर में, मेरा राज्याभिषेक है। मैं राजगद्दी पर बैठूंगा।" एडवर्ड ने कहा।

माइल्स के गाँव में

उस रात तो माइल्स और एडवर्ड एक सराय में रहे किन्तु दूसरे दिन दोपहर बाद एक पहाड़ी चोटी पर से माइल्स का गाँव दिखाई दिया। माइल्स ने उंगली के इशारे से कहा, "वह जो बड़ा-सा भवन दिखाई दे रहा है वही मेरा घर है। पचास कमरे हैं इसमें और बीस नौकर।"

वे पहाड़ी से नीचे उतरे। माइल्स ने एक चर्च को दिखाते हुए कहा, "इस चर्च में हम रविवार को प्रार्थना करते हैं। यह इस ओर सराय है। मैं बहुत वर्षों बाद आया हूँ पर यहाँ तो सब कुछ पहले जैसा ही दिखाई देता है।"

वे एक बड़े फाटक में घुसे। "यह है हमारा भवन। मैं आज अपनी जन्मभूमि में लौट कर कितना प्रसन्न हूँ, यह कह नहीं सकता। घर के लोग भी मुझे देखकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे।" माइल्स ने कहा और वह घोड़े से उतर पड़ा।

फिर उसने एडवर्ड को उतरने में सहायता की। तब वह घर के भीतर घुसा। एक नौजवान वहाँ बैठा था। माइल्स ने प्रसन्न होकर कहा, "आर्थर! कहो कैसे हो? ओह! कितने वर्षों बाद आज मैंने तुम्हारी सूरत देखी है! पिताजी कहाँ हैं?"

नौजवान ने माइल्स की ओर देखा, फिर बोला, "तुम कौन हो, मैंने पहचाना नहीं।"

"मैं माइल्स हूँ, तुम्हारा बड़ा भैया और तुम मेरे छोटे भाई आर्थर हो। मैं सात साल बाद लड़ाई से लौटकर आया हूँ।"

"मेरा भाई माइल्स तो तीन साल पहले लड़ाई में मारा जा चुका है। मेरे पास फ्रांस के मोर्चे से एक पत्र आया था, उसमें लिखा था कि वह मारा गया है।"

"यह बात झूठ है। पिताजी को तो बुलाओ। वे कहाँ हैं? वे मुझे तुरन्त पहचान लेंगे।" माइल्स ने कहा।

"पिताजी की मृत्यु हो चुकी है?" आर्थर ने पूछा।

"तो फिर किसी आठ-दस साल पुराने नौकर को बुलाओ। वे मुझे पहचान लेंगे।" माइल्स ने कहा।

"सभी नौकर नये हैं। पुराने नौकरों में से अब यहाँ कोई नहीं है।" आर्थर ने कहा।

"तो क्या तुमने सभी पुराने नौकरों को निकाल दिया है। पर कुमारी एडिथ तो यहाँ होंगी?" माइल्स ने कहा।

"कुमारी एडिथ जानती है कि माइल्स युद्ध में मारा गया है।" आर्थर ने कहा, "उसने वह पत्र अपनी आँखों देखा था और अब वह मेरी पत्नी बन चुकी है।"

"वह पत्र तुमने स्वयं लिखा होगा! तुमने उससे कहा होगा कि वह मर गया है।" माइल्स ने क्रोध से कहा। फिर उसने आर्थर की गर्दन दबोच ली। बोला, "तुमने मेरा घर-बार छीना, मेरे हिस्से की जमीन हथिया ली। अब तुमने कुमारी एडिथ को भी बहका लिया जोकि मेरी पत्नी बनने वाली थी।"

माइल्स ने अपने भाई को धरती पर दे मारा।

"दौड़ो ! दौड़ो !! बचाओ ! बचाओ !!" आर्थर चिल्लाया। नौकरों ने सुना तो दौड़कर वहाँ आ पहुँचे। वे माइल्स और एडवर्ड दोनों को पकड़कर थाने ले गए।

कैद में

माइल्स और एडवर्ड दोनों को जेल में बन्द कर दिया गया। जेल में एक दिन एडवर्ड ने माइल्स से कहा, "तुम्हारा क्या अनुमान है कि हमें यहाँ कब तक रहना पड़ेगा ?"

"जब तक न्यायाधीश के समाने हमें पेश नहीं किया जाता। न्यायाधीश आर्थर के मुकदमे की जाँच-पड़ताल करेगा और तब अपना निर्णय सुनाएगा।"

"क्या निर्णय देगा ?" एडवर्ड ने फिर पूछा।

"संभवतः वह सोच सकता है कि तुम और मैं दोनों पागल हैं और वह हमें कोड़ों की सजा देने के बाद छोड़ने को कह सकता है।" माइल्स ने कहा।

"मुझे कोड़े लगेंगे। राजा को कोड़े खाने पड़ेंगे।" एडवर्ड ने विस्मित होकर कहा।

जेल की कोठरी के दरवाज़े पर किसी के खाने की आवाज़ सुनाई दी। दरवाज़ा खुला और एक आदमी भीतर आया। उसने मेज़ पर भोजन रखा और ज्यों ही बाहर जाने के लिए मुड़ा, उसकी नज़र माइल्स पर पड़ी तो वह रुक गया।

माइल्स ने भी उसे पहचान लिया। वह बोला, "कासिल! पिताजी जब जीवित थे तुम हमारे यहाँ माली का काम करते थे न!"

"हाँ! पर यह तुम क्यों पूछ रहे हो?" उसने कहा, "तुम माइल्स हो क्या? पर नहीं, माइल्स तो लड़ाई में मारा जा चुका है।"

"नहीं, वह मारा नहीं गया है। मेरे भाई आर्थर ने अपने-आप जाली चिट्ठी लिखकर यह प्रचार किया है कि माइल्स मर गया है। क्योंकि वह मेरे हिस्से की सारी सम्पत्ति और मेरी भावी वधू कुमारी एडिथ को मुझ से छीनना चाहता था। यह सरासर झूठ और धोखा है। मैं तुम्हारे सामने जीवित हूँ। क्या तुम मुझे पहचान नहीं

रहे हो ?"

"श्रीमान् माइल्स ! मैं आपको जीवित देखकर बहुत ही प्रसन्न हूँ। तुम्हारा भाई आर्थर भला आदमी नहीं है। उसने सारे नौकरों को निकाल दिया है। मैं वे सारी बातें बताऊँगा और तुम्हारे पक्ष में गवाही भी दूंगा जिससे तुम्हारे हिस्से की सम्पत्ति तुम्हें मिल सके।" बासिल ने कहा।

"न, ऐसा मत करना। तुम किसी से मत कहना कि मैं यहाँ जेल में हूँ और जीवित हूँ। अगर आर्थर को पता लग गया कि कोई मेरे पक्ष में गवाही देने वाला मौजूद है तो वह जेल से निकलने पर मुझे मरवा डालेगा।" माइल्स ने बासिल को समझाया।

"तुम्हारी बात ठीक है। वह कर ऐसा कर सकता है।" बासिल बोला।

"जब मैं जेल से छूट जाऊँगा तो मैं लन्दन जाऊँगा, वहाँ मेरे कई मित्र हैं। सर हम्फ्री मार्लो वेस्टमिनिस्टर के राजभवन में नियुक्त कैप्टन हैं। वह भी मेरे साथ फ्रांस में थे। वह जानता है कि मैं मारा नहीं गया हूँ। और भी कई लोग हैं।

मैं अपनी राम कहानी उन्हें सुनाऊँगा और वे राजा से कहकर मुझे मेरी सम्पत्ति वापस दिलवा देंगे। प्यारे बासिल! जब तक मैं लन्दन से होकर वापस यहाँ न आऊँ, तुम मेरे बारे में किसी से कुछ न कहना।" माइल्स ने समझाकर बताया।

एडवर्ड खिलखिलाकर हँस पड़ा। "राजा! इससे पूछो कि इस समय इंगलैंड का राजा कौन है।"

बासिल ने कहा, "राजा हेनरी तो मर चुके। लोग कहते हैं कि राजकुमार एडवर्ड का अभी राज्याभिषेक नहीं हुआ। उनके सिर पर अभी ताज नहीं रखा गया। पर ताजपोशी की रस्म पूरी होगी और वे हमारे राजा बनेंगे।"

एडवर्ड ने कहा, "हमें किसी तरह इस जेल से निकल भागना चाहिए। मैं जल्दी से जल्दी लन्दन पहुँचना चाहता हूँ ताकि मेरी ताजपोशी हो सके।"

× × ×

एक दिन न्यायाधीश आया। उसने आर्थर का अभियोग सुना।

न्यायाधीश ने पूछा, "यह आदमी कौन है जिसने तुम्हारे साथ झगड़ा किया ?"

"श्रीमान् ! मैं नहीं जानता। मैं कैसे जान सकता हूँ। यह या तो कोई चोर है या ठग या फिर पागल। यह कहता है कि यह मेरा भाई माइल्स है जबकि माइल्स आज से तीन वर्ष पूर्व फ्रांस के मोर्चे पर मारा जा चुका है। और उसके साथ जो लड़का है, वह तो एकदम पागल है। वह कहता है कि मैं इस देश का राजा हूँ।" आर्थर ने बताया।

न्यायाधीश ने निर्णय सुनाया, "इस आदमी को तो बेड़ियाँ पहना दो और कटघरे में बन्द कर दो और उस लड़के की अच्छी तरह ठुकाई करो और छोड़ दो ताकि उसे इस बात की समझ आ जाए कि बुरे लोगों का साथ नहीं करना चाहिए।"

माइल्स ने विरोध किया, "नहीं श्रीमान ! बालक अभी बहुत छोटा है। यह मार को सह नहीं सकेगा। यह कुछ बीमार भी है। उसके बदले मुझे मार सकते हैं।"

"जैसा यह चाहता है, वैसा ही करो।" न्यायाधीश ने आज्ञा दी।

माइल्स पर खूब मार पड़ी। तब उसे बेड़ियां पहनाकर कटघरे में बन्द कर दिया गया।

माइल्स को पिटते देखकर वहां भीड़ जमा हो गई और उसे चोर-उचक्का समझ कर उस पर पत्थर फेंकने लगी। पर एडवर्ड माइल्स के आगे खड़ा हो गया और भीड़ को सम्बोधित करके बोला, "पीछे हट जाओ। यह मेरा मित्र है। मैं आपको आज्ञा देता हूं कि पीछे हट जाओ!"

एडवर्ड की बात सुन कर लोग हंसने लगे। कुछ ने कहा, "यह एक बहादुर लड़का है। यह अपने मित्र को बचाने का पूरा प्रयत्न कर रहा है।"

शाम को बासिल आया और उनको भोजन दे गया। फिर उन्हें छोड़ दिया गया। माइल्स और एडवर्ड दोनों लन्दन की ओर चल पड़े।

राज्यारोहण

जब माइल्स और एडवर्ड लन्दन पहुँचे तो वहाँ बड़ी भीड़ जमा थी। सारे भवनों पर झंडे फहरा रहे थे। वे एक सराय में जाकर ठहरे। खा-पीकर जब सुस्ताने बैठे तो एडवर्ड ने माइल्स को आज्ञा दी, "कलम और कागज ले आओ। मैं एक पत्र लिखूँगा।"

"क्या तुम राजा के नाम पत्र लिखोगे?" हँसते हुए माइल्स ने कहा, "आज राज्यारोहण का दिन है। आज राजा को पत्र पढ़ने की फुर्सत नहीं है।"

एडवर्ड माइल्स के सामने कागज कलम लेकर बैठ गया और कुछ सोचने लगा कि कौन-सी ऐसी बात लिखूँ जिससे उन्हें विश्वास हो जाए कि वास्तविक राजकुमार एडवर्ड मैं हूँ। कौन-सी ऐसी बात है जिसे मैं तो जानता हूँ पर टाम नहीं जानता जो आज वहाँ मेरे स्थान पर राजा बना बैठा है। कोई ऐसी बात होनी चाहिए जिसे मेरे सिवा दूसरा कोई न जानता हो।..... याद आया। एक बात ऐसी है, जिसे मेरे सिवा दूसरा

कोई नहीं जानता।'

उसने पत्र में कुछ शब्द लिखे। फिर उसने कहा, "अब हमें राजप्रसाद में चलना चाहिए।"

माइल्स और एडवर्ड दोनों वेस्टमिनिस्टर राजभवन के बड़े फाटक पर पहुंचे।

राजभवन में लन्दन के सभी गण्य-मान्य धनी-मानी नागरिक एकत्र थे। राजपरिवार के लोग और उच्च राजकर्मचारी भी वहां उपस्थित थे। राजभवन के भीतर ही चर्च था, जिसके भीतर राज्यारोहण होता था। टाम को अत्यन्त मूल्यवान राजकीय वस्त्र पहनाकर तैयार किया गया था। थोड़ी ही देर में वह राजा बनने वाला था। उसके पास लार्ड हेर्टफोर्ड और लार्ड सामरसैट और राज्य के उच्च अधिकारी उपस्थित थे। द्वार पर सर हम्फ्री मालों खड़े थे ताकि आज्ञा मिलते ही सैनिकों को मार्च करने और नए राजा को सलामी देने को कह सकें।

बड़े फाटक पर कुछ झगड़ा हो गया था। सर हम्फ्री ने अपने एक सिपाही को भेजा कि जाकर देख आओ कि वहां क्या हो रहा है।

सिपाही तुरन्त लौट आया और बोला, "वह एक आदमी और एक लड़का है। आदमी अपना नाम 'माइल्स' बता रहा है और लड़का कह रहा है कि उसके पास राजा को देने के लिए एक पत्र है। मुझे लगता है कि वह लड़का पागल है। वह कहता है कि वह राजा है।"

"माइल्स!" सर हम्फ्री ने कहा, "वह तो एक वीर पुरुष है और बहुत अच्छा सैनिक है। वह उस झगड़े में क्या कर रहा है?"

टाम ने आगे बढ़कर कहा, "तुम किसी लड़के के बारे में कुछ कह रहे हो? वह चिट्ठी देना चाहता है!"

"हाँ महामहिम महाराज!"

"उनको यहाँ ले आओ। टाम ने आज्ञा दी।

"किन्तु महामहिम महाराज!....." सर हम्फ्री ने कहा।

"मैं आज्ञा देता हूँ कि उन्हें तुरन्त मेरे पास लाओ।" टाम ने कहा।

सिपाही माइल्स और एडवर्ड को आकर ले आया। उन्हें भीतर टाम के पास पहुँचा दिया

जहाँ सभी बड़े-बड़े लोग एकत्र थे।

ज्योंही एडवर्ड दरवाज़े के भीतर पहुँचा, टाम दौड़कर गया और उसके पैरों में जा पड़ा।

"महामहिम! आप बिल्कुल ठीक समय पर लौट आए हैं।" टाम ने कहा।

"इन्हें फिर पागलपन का दौरा पड़ गया लगता है।" लार्ड हेर्टफोर्ड ने कहा, "अब इस समय हम क्या करें!"

एडवर्ड ने टाम को ऊपर उठाया और साथ-साथ खड़े हो गए।

"इस को रोको।" सर हम्फ्री ने चिल्लाकर कहा, "माइल्स तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"ठहरो।" लार्ड सामरसैट ने कहा। इन दोनों के चेहरों को देखो। वे बिल्कुल एक जैसे हैं। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। हमारे राजकुमार नकली नहीं हैं।" सम्भवतः वे वास्तविक राजकुमार ही नहीं हैं।"

"क्या इस नए लड़के से कोई ऐसा प्रश्न पूछा जा सकता है जो हमें निर्णय करने में सहायता दे कि वास्तविक राजकुमार कौन है।" लार्ड

सामरसैट ने कहा।

लार्ड हेर्टफोर्ड एडवर्ड के सामने आए और प्रश्न के बाद प्रश्न पूछने लगे। राजा हेनरी, रानी—एडवर्ड की माता और राजमहल तथा राजमहल के कर्मचारियों के बारे में कितने ही प्रश्न उन्होंने पूछे जिनके ठीक-ठीक उत्तर एडवर्ड ने दे दिए।

"किन्तु यह हो सकता है कि कोई इतनी सारी बातें जानता हो पर वास्तविक राजकुमार फिर भी न हो।" लार्ड सामरसैट ने सन्देह प्रकट किया।

"इस चिट्ठी में क्या लिखा है?" टाम ने पूछा।

लार्ड हेर्टफोर्ड ने चिट्ठी लेकर पढ़ी। उसमें लिखा था :

"राजा की मोहर कहाँ है?"

वह टाम की ओर घूमे और पूछा, "महामहिम! मैंने पहले भी आपसे पूछा था पर आपने आज तक नहीं बताया कि वह मोहर आपने कहाँ रखी है?" लार्ड हेर्टफोर्ड ने पूछा।

"मैं नहीं जानता कि मोहर क्या चीज है। और मुझे यह भी पता नहीं कि वह कहाँ है।" टाम ने उत्तर दिया।

एडवर्ड ने कहा, "भीतर मेरे कक्ष में मेरी सैनिक वेश-भूषा है, उसी लोहे वाले कवच में वह रखी हुई है। आप अभी आकर देख सकते हैं।"

"अच्छा, वह गोल-गोल-सी चीज।"

"आप उसका क्या उपयोग करते थे?" लार्ड हेर्टफोर्ड ने टाम से पूछा।

"मैं उससे बादाम तोड़ा करता था।" टाम ने कहा।

"वह उससे बादाम तोड़ता था।" व्यंग्य की हँसी हँसते हुए लार्ड बोले।

•

अन्त

वास्तविक राजकुमार एडवर्ड को राजा बनाया गया और वह बड़ा अच्छा राजा बना। क्योंकि वह प्रजा की कठिनाइयों को भुगत चुका था और जानता था। टाम भी राजमहल में ही रहता था और राजा का गहरा मित्र था।

सर माइल्स को उनकी सम्पत्ति दिलवा दी
गई और एडिथ से उसका विवाह भी हो गया।
राजा एडवर्ड भी कभी-कभी उसके पास आते थे।
ह्यूगो को माइल्स ने फिर अपने बगीचे में माली
के स्थान पर नौकर रख लिया था।

जान कैंटी को फिर कभी किसी ने नहीं देखा
और टाम ने अपनी माँ और बहनों को देहाती
इलाकों में एक अच्छा घर रहने को दे दिया था।

किंग एडवर्ड भी ज्यादा देर जीवित नहीं
रहा। जब वह मर गया तो टाम भी राजभवन
से चला गया और अपनी माँ के साथ रहने लगा।
बाद में उसने यह कहानी लिखी कि कैसे एक
भिखारी राजकुमार और राजकुमार भिखारी
बना।